International Journal of Applied Research 2015; 1(2): 244-246

International Journal of Applied Research

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(2): 244-246
www.allresearchjournal.com
Received: 08-11-2014
Accepted: 24-12-2014

डॉ. अनिल गुप्ता
सह–आचार्य, (चित्रकला),
राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट,
जयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ. अनिल गुप्ता
सह–आचार्य, (चित्रकला),
राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट,
जयपुर, राजस्थान, भारत

जयपुर की भित्तिचित्रण जनकला

डॉ. अनिल गुप्ता

सारांश

आज जनकला का स्वरूप अत्यधिक सौन्दर्यपूर्ण एवं विशाल है। यह माना जा सकता है कि प्राचीन समय में इस कला को पब्लिक आर्ट नहीं कहा जाता था, परन्तु उसके मायने और उद्देश्य समान थे। जनकला के कई पहलू होते हैं, जनकला में कलाकार अपना योगदान देता तो है परन्तु वह अपनी सोच पर आधारित कृति का निर्माण नहीं करता है। वह दृष्टि आयोजक अथवा शासक या अधिकारी की होती है। यह अलग–अलग लोगों को अलग–अलग आभास देता है और वे निजी स्तर पर उसका आन्द लेते हैं।

मूल शब्द : भित्ति चित्रण, म्यूरल, ढोला मारू, गणगौर, रिलिफ पद्धति, अर्द्ध उभार, मूर्तवत।

प्रस्तावना

प्रागैतिहासिक काल में भित्तिचित्रों के लिये मध्यप्रदेश में सिंघनपुर भीमबेटका, पंचमढ़ी, होशंगाबाद व उत्तरप्रदेश में मिर्जापुर आदि स्थानों को प्राचीन भित्तिचित्रण के लिए जाना जाता था। परन्तु वर्तमान में किये गये नवनी सर्वेक्षणों के द्वारा राजस्थान के दक्षिणांचल में दरा, आलनिया, काली का कुँआ, कपिलधारा कामधात, अमरेश्वर, आनझिरी नाला, छतनेश्वर आदि स्थानों से उपलब्ध शैलचित्रों के माध्यम से कला के इतिहास में नये आयाम जुड़े गये हैं इन चित्रों में जंगली भैंसे, गैंडे, हाथी, बाहरसिंगा व अन्य जंगली पशुओं के शिकार के दृश्य उपलब्ध होते हैं, जिनका कालक्रम 2500 वर्ष पूर्व अनुमानित है और ये आदिमानव की कलाप्रवृत्ति एवं जीवनचर्या पर प्रकाश डालते है। इस प्रकार आदिकाल से जनकला अग्रसर है। जयपुर के समीप विराटनगर की पहाड़ियो में भी शैलाश्रय, पुरातत्व विभाग, राजस्थान के द्वारा खोज निकाले हैं। इन साक्षों के आधार पर राजस्थान की भित्तिचित्रण जनकला की पृष्ठभूमि को बल मिलता है।

सोलहवीं–सत्रहवीं शती में अकबर और जहाँगीर की भी भित्तिचित्रण में रूची थी। दोनो ही बादशाह ईसाइ धर्म प्रचारकों से प्रभावित थे। इसलिए उन्होंने संत जान बैपटिस्ट, एन्थनी, बर्नेरडाइन, भागी, संत पाल, ग्रिगरी, एम्ब्रोस और महात्मा ईसा के चित्र आगरे के किले में गोवा के पुर्तगाली कलाकारों से बनवाये। उन्हीं के समय में ''आला गीला'' पद्धति इटली से भारत लाई गई। अन्तर मात्र इतना है कि राजस्थान की आलागीला पद्धति में जिलह या पालिश की जाती है और इटली पद्धति में नही। जयपुर के राजाओं के मुगलों से प्रगाढ़ संबंधों के कारण जयपुर में उस पद्धति का प्रारम्भ हुआ और इस प्रकार पूरा राजस्थान इस पद्धति से प्रभावित होकर एवं मुगलकला से प्रेरणा पाकर विभिन्न शैलियों का जन्म हुआ और इन्हीं प्रभावित कलाक्रमों से जनकला आधुनिक युग तक प्रभावित रही।

उपरोक्त युग मे जो चित्र बने वे राजाओं, सामान्तो और घनाढ़यों के प्रश्रय में उनके जीवन की विलासिता से संबंधित उनकी इच्छानुसार उनके आवास स्थानों में बने। इसलिये ऐसे चित्रों में उस युग की सामान्तवादी जीवन की छाप भली प्रकार से देखने को मिल जाती है। उस युग में सामान्य जीवन सामन्तों से जुड़ा हुआ था। इसलिये उनकी समस्त गतिविधियाँ ही सामाजिक जीवन के रूप में चित्रित की गई। भित्तिचित्रण पद्धति में भित्ति को तैयार कर उस पर चित्रण किया जाता है। मिश्र के कलाकारों तथा पुनर्जागरण काल के कलाकारों ने इस परम्परागत तकनीक के स्थान पर किसी भी माध्यम से चित्रण कर दिवार को सजाना प्रारम्भ किया, इसी को म्यूरल की संज्ञा दी गयी। इसमें मोजाइक, लकड़ी, सीमेंट एवं टेराकोटा आदि विभिन्न वस्तुओं का प्रयोग होता हैं।

अकबर (1557 ई.) ने मुगल शासन का सर्वांगीण विकास किया। राज्य में स्थायित्व के साथ सांस्कृतिक चेतना को भी विशेष महत्व दिया। अकबर स्वयं कलाप्रेमी था। इनके दरबार में विभिन्न विधाओं के महारथी नव रत्न थे। विधिवत चित्रशाला की स्थापना इनके शासन की महान उपलब्धि थी। अकबर स्वयं धर्मनिरपेक्षता में विश्वास रखता था। एवं समस्त धर्मों के प्रति आदर का संदेश जनसाधारण को देने के लिए उन्होंने जनकला के विभिन्न स्वरूपों को उपयोग में लिया। जैसे नुक्कड़–नाटक, जनसामान्य के लिए चित्रण एवं घोषणाएँ।

यह घोषणाएँ उस समय प्राचीन विज्ञापन का स्वरूप थी। यहाँ तक की जनसामान्य कि लिए सभी धर्मों के आदर एवं प्रचार के लिये किये गये चित्रण एवं शिल्प भी विज्ञापन के ही स्वरूप थे। दसवन्त और बसावन प्रमुख चित्रकारों में थे, जिन्होनें रज्यनामा का चित्रण कार्य किया। इनके अलावा अन्य कलाकारों ने भी जनसामान्य के लिए एवं नगरीय सौन्दर्यकरण के लिए भी दीवारों पर चित्रण किया था।

सन् 1605 में जहाँगीर ने मुगल साम्राज्य की बागड़ोर संभाली और अकबर की सभी मान्यताओं और परम्पराओं को आगे बढ़ाया। मुगल चित्रकला के इतिहास में जहाँगीर का काल 'स्वर्णयुग' के नाम से प्रसिद्ध है। जहाँगीर स्वयं सर्वगुण सम्पन्न, उच्च कोटि के कला पारखी, चित्रकार, उदार प्रेमी, लेखक, योग्य न्यायप्रिय शासक, प्रकृति उपासक एवं जनसामान्य का प्रिय बादशाह था। जहाँगीर को मुख्य चित्रकार उस्ताद मंसूर थे, जो प्रकृति एवं पशु–पक्षियों के चित्रों में दक्ष थे। बिशनदास 'शबीह' (व्यक्तिचित्र) बनाने में प्रवीण था। बिशनदास एवं जहाँगीर के अन्य चित्रकारों ने भी नगर सौन्दर्य के लिए बेहतरीन चित्रण किया।

(1) अजमेर पुलिया (जयपुर)

यह पुलिया जयपुर नगर में रेल्वे स्टेशन के नजदीक स्थित है। इसका नाम अजमेर पुलिया इसलिए पड़ा है क्योंकि जयपुर से अजमेर इस पुलिया के ऊपर से जाना पड़ता है। इस वजह से लोगों ने इसका नाम अजमेर पुलिया रख दिया। इस पुलिया पर जो भित्ति चित्रण हुआ है वह कलात्मकता की दृष्टि से बहुत अच्छा है। इस पर विभिन्न प्रकार के भित्ति चित्रण बने हैं जैसे गांवो की महिलाओं के द्वारा घर के काम–काज करते हुए, शाही महिलाएँ बगीचों में फूल तोड़ते हुए, राजघराने में बैठे आराम फरमाते राजा–रानीयां, रथ पर चलते हुए, शाही महलों में नृत्यकियों के नृत्य मुद्राओं का चित्रण, महाराणा प्रताप के जीवन कथा के चित्रण, राजा–महाराजाओं द्वारा शिकार करते हुए, शयन कक्ष में आराम करते हुए, रानियों के द्वारा स्वागत करते हुए, राजदरबारों में बैठे शाही लोगों में वार्तालाप का चित्रण एवं विभिन्न प्रकार के पशु–पक्षियों के चित्रण, हाथी, घोड़े, शेर, हिरण, ऊँट, मोर आदि। इस प्रकार के चित्रों द्वारा चित्रकारों ने जयपुर नगर की राजघराने की कथा का पूर्ण चित्रण कर दिया है।

अजमेर पुलिया पर बने भिति चित्रों में जयपुर नगर की ऐतिहासिक कथाओं का चित्रण किया गया है, जो जयपुर के ऐतिहासिक वैभव को प्रदर्शित करते हैं। इन चित्रों के अवलोकन से हमें प्रतीत होता है कि जनकला का प्रभाव जयपुर नगर में अभी कम नहीं हुआ।

(2) बाईस गोदाम पुलिया (जयपुर) –

इस पुलिया का लोकार्पण माननीय श्री भैरोसिंह शेखावत भूतपूर्व मुख्यमंत्री राजस्थान द्वारा दिनांक 03 मार्च, 1996 को सम्पन्न हुआ, जो हाल ही में भिति चित्रण से सज्जित हैं। इस पुलिया पर चित्रित भित्ति चित्रों में रेखा की लयकारिता, गति, समान मोटाई तथा अभिव्यंजनात्मकता दर्शनीय है। रेखा के किनारे उठाते हुए इन चित्रों में छाया–प्रकाश को भी महत्व दिया है। वृक्षों की पत्तियों, फूलों, बेलों व फूलों के शाही गमलों आदि सभी में रेखायें बोलती प्रतीत होती है। रेखा की सुकुमारिता तथा माधुर्य इन चित्रों में इसलिए है कि इस समय छायाचित्र प्रक्रिया के प्रभाव व नकल के कारण चित्रों में यथार्थता को महत्व दिया है। इससे रेखा अपनी कठोरता ,खोकर कोमल होने लगी। इस पुलिया पर फूल–पत्तियों को भी बड़े कलात्मक तरीके से चित्रित किया है। इसके नजदीक सहकार भवन के नीचे दीवार पर बने भित्तिचित्रों को भी इनमें शामिल करना चाहूंगा। इन भित्तिचित्रों में एक विशाल चित्र बना हुआ है, जो ग्रामीण परिवेश को परिभाषित करता है। इसमें 12 ऊँटों, 5 महिलाओं, एक पुरूष और तीन बालक व दो बालिकाओं को चित्रित किया है। ये जनकला के उदाहरण है जो आम आदमी के लिये बनाये गये हैं।

(3) त्रिवेणी पुलिया (जयपुर)

इस पुलिया का नाम त्रिवेणी पुलिया इसलिए पड़ा है, यह त्रिवेणी नगर कॉलोनी के समीप स्थित है। इस पुलिया के भित्तिचित्रों को अलग ढंग से चित्रित किया गया है। इसमें रंग को अधिक महत्व दिया गया है। सभी चित्रों की पृष्ठभूमि को अलग–अलग रंगों से रंगा है। इसमें केवल रंगों के द्वारा ही सौन्दर्य प्रदर्शित किया गया है। जिसमें हरा, पीला, नीला, सफेद व गुलाबी रंग को अंलकृत किया गया है और उसमें छापा चित्रण पद्धति का इस्तेमाल किया गया है। फूलों, बेलों व मयूरों की आकृति से कटा हुआ सांचा लेकर उसमें रंग को पोत दिया गया है। इस प्रकार सांचा हटाने पर दीवार विभिन्न रंगों की पृष्ठभूमि पर विभिन्न चित्र छप जाते हैं। यह चित्रण प्रक्रिया बहुत ही सरल है। इस पुलिया पर सम्पूर्ण चित्रण इसी प्रकार हुआ है, जो सौंदर्य अभिरूचि की दृष्टि से श्रेष्ठ है। यह जनकला का उदाहरण कई रंगों से सज्जित है, जो सामान्यजन का आनन्दानुभूति प्रदान करता है।

(4) दुर्गापुरा पुलिया (जयपुर) –

इस पुलिया पर राजस्थान की संस्कृति की तस्वीर उभरती है। मानवाकृतियों में यथार्थता के साथ लावण्य भी है। मानवकृतियों के चेहरे गोल, उत्तम स्वास्थ्य, भवे किंचित उठी हुई सुडौल नाक तथा कोपलों की भांति अधर बनाये। मानवाकृतियों का कद अनुपातिक है। स्त्रियों के मेंहदी रचे हाथ तथा पैर, माथे पर बिंदी या चंदन का लेप भी दृष्टिगत होता है। स्त्रियों की वेशभूषा मुगल तथा राजस्थानी ही है तथापि कहीं–कहीं पुरूषाकृतियों के नेत्र कुछ बड़े तथा सुस्त हैं। इन चित्रों में चित्रकार ने इनके गुणों को अत्यन्त निपुणता से स्पष्ट किया। कहीं कुस्ती लड़ते पहलवानों को चित्रित किया है तो कहीं पोलो खेलते घोड़ो पर सवार गतिशील खिलाड़ियों को चित्रित किया है। कहीं राजस्थानी लोक नृत्य करते स्त्री–पुरूषों की विभिन्न मुद्राओं को चित्रित किया है। गुजराती नृत्य 'डांडिया' का भी चित्रण किया गया है। हाथियों व ऊँटों पर निकलती झांकियों को, वन में शेर–चीतों को, नगाड़े बजाते पुरूषों को, कालबेलिया जाति के पुरूषों द्वारा बीन बजाते हुए, राजस्थानी सावन के गीत गाती व नृत्य करती महिलाओं को व गांव के लोगों को बड़े कलात्मक तरीके से इन भिति चित्रों में चित्रित किया है। राजस्थानी कला संस्कृति में लोक कलाओं को प्रदर्शित करते हुए विभिन्न गीतों व नृत्यों के साथ माण्डणों को भी चित्रित किया है। जयपुर के स्वरूप में जन्तर–मन्तर का चित्रण, ऊंट पर सवार स्त्री–पुरूष का चित्रण, मयूरों का अंकन बड़ा प्रभावशाली है। इनके अलावा हाथ–पैर पर मेंहदी के विभिनन नमूनों को सुन्दर तरीके से चित्रित किया है। इस प्रकार यह पुलिया राजस्थानी संस्कृति की चादर ओढे हुए प्रतीत होती है।

(5) टोंक फाटक पुलिया (जयपुर) –

जयपुर नगर में स्थित इस पुलिया का लोकार्पण माननीय श्री मोहन लाल सुखाड़िया, भूतपूर्व मुख्यमंत्री राजस्थान के द्वारा सन् 1971 में हुआ। यह पुलिया अन्य पुलियाओं से कला दृष्टि में भिन्न है क्योंकि सभी पुलियाओं पर भित्ति चित्रण हुआ है किन्तु इस पर मूर्तिशिल्प व म्यूरल बड़े कलात्मक ढंग से प्रदर्शित किये गये हैं। जिनमें महिलाओं, पुरूषों व पशु–पक्षियों को रेखाओं के द्वारा उकेरकर चित्रण किया गया है। जिसको 'रिलिफ पद्धति' कहा जाता है। राजस्थानी संस्कृति के मांडनों का पुट झलकता है। जिनमें कहीं तो महिलाओं को ढोलक बजाते हुए चित्रित किया है तो कहीं नृत्य करते हुए चित्रित किया है। हर स्थान पर भिन्न–भिन्न म्यूरल प्रदर्शित किये हैं, जिनमें रंगों का प्रयोग न करते हुए अर्द्ध उभार युक्त मूर्तिशिल्प प्रदर्शित किये गये हैं, जिनमें पुरूषों को राजस्थानी वेशभूषा में अलग–अलग मुद्राओं में

मूर्तवत किया गया है, जिनमें नृत्यमग्न मुद्राओं को प्रदर्शित किया है। इन म्यूरल व मूर्तिशिल्पों का संयोजन बड़ा ही कलात्मक नजर आता है।

(6) रेलवे स्टेशन पर अलकृंत म्युरल (जयपुर) –

सन् 1989 में जयपुर के रेलवे स्टेशन पर निर्मित म्युरल कृपाल सिंह जी, गोवर्धन सिंह बाबा, तथा देवकीनन्दन शर्मा द्वारा बनाया गया था, उसके रंग खराब होने के कारण रेलवे विभाग ने उन्हें दोबारा बनवाने के लिए पूतवा दिये, इसके पश्चात दुबारा उस कार्य को करने का मौका अथवा उत्तरदायित्व रणजीत सिंह जी को दिया गया। उन विलक्षण प्रतिभा के कार्य की कुछ झलक अपने कार्य में लाकर कला–रसिकों को कला के सागर में कुछ बूंदे ग्रहण कर आनन्दित होने का मौका प्रदान किया। राजस्थान की धरोहर कहे गये ये चित्र विशाल गणगौर की सवारी एवं ढोला मारू, देवकीनन्दन जी का और नौका विहार, गोवर्धन बाबा द्वारा निर्मित चित्र को पुनः सजीव करने का प्रयास किया। ये भित्ति चित्र स्टेशन के प्रतिक्षालय में बनाया गया है। जहां देशी–विदेशी पर्यटक और यात्री सफर की थकान उतारते हैं। रेलवे ने इसके लिए कला विद से सम्मानित वरिष्ठ चित्रकार, रणजीत सिंह चूड़ावाला की मदद ली है। उन्हीं के निर्देशन में यह हैरिटेज पेंटिंग्स बनी है। उन्होंने इन्हें डेढ़ महिने में पूर्ण किया। रणजीत सिंह ने बताया कि मुझे वैसी हैरिटेज पेन्टिंग्स बनाने के लिए कहा गया था, जिसमें राजस्थान का गौरव तो झलकता हो साथ ही उस जमाने के राजा महाराजों की जीवन शैली की झलक भी मिलती हो।

रणजीत सिंह ने दस पेन्टिंग्स को 30 फिट लम्बाई एवं 9 फिट चौड़ाई आकार में सृजित किया, इसमें गणगौर का जुलूस आकर्षण का केन्द्र है। इसके साथ प्रवेश पर सात चित्रों को बनाया गया है। इनमें हाथी और घोड़ों की लड़ाई, राजा का जुलूस, पूजा करती पारम्परिक परिधान पहने महिलाएं, ढोला मारू के साथ घूमर और चकरी नृत्य करते नृतकों के चित्र खास है। इन चित्रों के चयन के पीछे मंशा थी कि पर्यटक इनमें हमारे गौरवशाली इतिहास की झलक देख सकें और यहां की परम्पराओं को भी समझ सके। इसके अलावा रंग संयोजन इस तरह से किया है कि जो देखने वालों की आँखों को भी आनन्द प्रदान करें।

राजस्थान में जनकला चित्रण अलंकरण का वर्णन करे तो राजस्थान के विभिन्न नगरों में अनेक स्थानों पर जनकला अलंकरण है। जयपुर की मयूर बालिका में मयूरों के शिल्प सामान्य जन हेतु प्रदर्शित है। उक्त वाटिका में मयूरों के चित्रण के विभिन्न क्रिया कलपों का शिल्पांकन व चित्रण किया गया है। मयूर चित्रांकन समंदर सिंह खंगारोत द्वारा किया गया। इस तरह राजस्थान के प्रमुख कलाकारों के द्वारा सुरेश शर्मा, नाथूलाल वर्मा, ज्योति स्वरूप, डॉ. शैल चौयल एवं रणजीत सिंह चूड़ावाला ने भित्ति चित्रण किया है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. लेख : डॉ. ममता चतुर्वेदी, पृ. 2, 20 नवम्बर 1994, राजस्थान पत्रिका, जयपुर।
2. लेख : डा. ममता चतुर्वेदी, पृ. 20, 20 अक्टूबर, 1990 त्रेमासिक आकृति, जयपुर।
3. लेख : मोहनलाल गुप्ता, राजस्थान की भित्तिचित्रण में लोकदर्शन, पृ. 6, अप्रैल, 1995, आकृति।
4. राजेन्द्र रावल, रीता रावल : राजस्थान का इतिहास, 1998, जयपुर।
5. जयसिंह नीरज : राजस्थानी चित्रकला, 1994, रा.हि.ग्र.अ., जयपुर।
6. राम पाण्डे : राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास, भाग प्रथम, पृ. 89, जयपुर।